

---

# Shri Mahaganapati Stotra Panchakam

---

## श्रीमहागणपतिस्तोत्रपञ्चकम्

---

### Document Information

Text title : Mahaganapati Stotra Panchakam

File name : mahAgaNapatistotrapanchakam.itx

Category : ganesha, panchaka

Location : doc\_ganesha

Proofread by : Sivakumar Thyagarajan

Description/comments : Stotrasamuccaya Volume 1 2

Latest update : October 3, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 3, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीमहागणपतिस्तोत्रपञ्चकम्



ॐ श्रीगणेशाय नमः ।

वन्दे सिन्दूरकान्तिं मदयुतकरटप्रान्तसम्भ्रान्तभृङ्ग-  
ध्वानैरापूरिताशामुखमचलसुताह्लादपार्थाधिविचन्द्रम् ।  
शुण्डाकाण्डे समुद्रान् सुमणिगणयुतान् लीलयापूर्य लोके  
दिव्ये भौम्ये किरन्तं गजवरवदनं शोणशैलेन्द्रसूनुम् ॥ १ ॥

वन्दे दन्तेन मेरौ विधुकुलनृभुजां कौरवाणां चरित्रं  
व्यासोक्तं भारताख्यं सकलवृषयुतं संलिखन्तं द्विपास्यम् ।  
शुण्डादण्डेन भित्त्वा कुलधरनिवहं कन्दुकीकृत्य बाल्ये  
व्योम्नो मार्गे क्षिपन्तं क्षितिवरतनयाशोणशैलेन्द्रसूनुम् ॥ २ ॥

चन्दे दन्तावलास्यं दशनजपसरो लङ्कं सत्कुठारं  
हस्तैरत्यद्भुताम्भोरुहवरसदृशैः सन्दधानं गणेशम् ।  
आरुह्याखुं महान्तं अमररिपुगणैरङ्कुशाग्रेण युद्धे  
हन्तारं हस्तिवक्रैर्गजमुखदनुजं शोणशैलेन्द्रसूनुम् ॥ ३ ॥

वन्दे दन्तापशान्त्यै सकलमुनिजनैः सामऋद्भ्युरख्यवेदा-  
नध्येतुं मुक्तिवाञ्छाप्रदफलसहितान् वन्दितं विघ्नराजम् ।  
भक्तानामन्तरायाञ्छिरसिकृतमहाडिण्डिमाडम्बरेणा-  
मुष्णन्तं वर्ष्मभासा जितघनमनघं शोणशैलेन्द्रसूनुम् ॥ ४ ॥


कैलासे कमनीयरत्नखचिते सैहे स्थितं विष्टरे  
शम्भुं सर्वचराचरात्मकजगद्रूपं प्रणत्वा फलम् ।  
चूतं तत्करसंस्थितं रसयुतं स्कन्दागतेः प्राङ् मुदा  
चर्वन्तं परिगृह्य कुञ्जरमुखं वन्दामहे शाङ्करम् ॥ ५ ॥


इति श्रीमहागणपतिस्तोत्रपञ्चकं समाप्तम् ।

mahAgaNapatistotrapa nchaka, might have  
been composed by one resident in or near the  
famous shrine of tiruvaNNAmalai (aruNAchala),  
as there is reference to this sacred place  
in the refrain (shoNashailendrasUnuM).

Proofread by Sivakumar Thyagararajan

---

——  
*Shri Mahaganapati Stotra Panchakam*  
pdf was typeset on December 3, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

